स्वाध्यायान्मा प्रमदः

एआरटी पोर्टफोलियो

टीडीसी प्रोग्राम प्री एलआईसी

अप्रैल '18–जून '18

बुनियाद

अध्यापक/अध्यापिका का नाम : _____

स्कूल का नाम :– - _____

प्यारे साथियों,

आप सभी को अपने विद्यालयों में टीडीसी प्रोग्राम की दूसरी एल आई सी सफलतापूर्वक संपन्न करने के लिए बहुत बहुत बधाई| आप लोगो ने अपने विद्यालयों में अकादमिक माहौल को बेहतर बनाने की जो मुहिम संभाली है और जो प्रयास किये हैं वे वाकई काबिले तारीफ हैं | आपने ए आर टी सदस्य की यात्रा में पहली एल आई सी में बच्चों और शिक्षको के साथ कनेक्ट स्थापित कर, इस प्रोग्राम की नींव रखी| दूसरी एल आई सी में आपने कनेक्ट स्थापित करने के अपने प्रयासों को जारी रखते हुए , बच्चो की समझ के आकलन पर काम किया और शिक्षण-अधिगम के अंतर को कम करने का प्रयास किया| आपके प्रयासों के कारण ही अब ए आर टी मीटिंग और 30 मिनट के सत्रों में अकादमिक चर्चा का माहौल बना है| इन्हीं प्रयासों को आगे बढाते हुए हमें अब कोशिश करनी हैं कि इन सत्रों में आपके द्वारा और आपके साथी शिक्षक-शिक्षिकाओं के द्वारा किये गए प्रयास कक्षा कक्षों तक जाए और हमारी प्रतिदिन की कक्षा गतिविधियों का हिस्सा बने| आप में से बहुत से साथियों ने इसके लिए पहले से ही प्रयत्न शुरू कर दिए हैं, इन्हीं प्रयत्नों से हमें सीखकर इन्हें और बेहतर बनाना है

जैसा की हम जानते हैं कि अगले आने वाले 3 महीनों में विद्यालय में हमारे साथी 'मिशन बुनियाद' के अंतर्गत, बच्चों के बुनियादी कौशल बेहतर करने का प्रयास कर रहे होंगे| इसका ध्यान रखते हुए अगले तीन महीनों में हम प्रयास करेंगे कि हम इस मिशन में अपना योगदान दे पाए और अपने विद्यालय में इसे सफलता पूर्वक संपन्न करने के लिए एक टीम की तरह कार्य कर पाए | इसमें आपके साथ, आपके एआरटी सदस्य महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे होंगे | हमें यह बताते हुए अत्यंत ख़ुशी हो रही हैं की इसी मुहिम में आपके साथ आपके विद्यालय के प्राइमरी इंचार्ज भी आ रहे हैं | इस सत्र से विद्यालय में टी डी सी, प्राइमरी इंचार्ज. मेंटर टीचर और एच ओ एस साथ मिलकर विद्यालय के अकादमिक विकास पर काम काम करेंगे| इसी सत्र में हमारे बहुत से नए मेंटर शिक्षक/शिक्षिका भी हमारे साथ जुड़ रहे होंगे, जो आप के निरंतर सहयोग के लिए मई – जून से पूर्ण रूप से सक्रिय हो पाएंगे| इन्हीं सब बातों का ध्यान रखते हुए हम लोग अप्रैल से जून का समय नई एल आई सी शुरू करने के बजाय हम एक प्री – एल आई सी पर काम कर रहे होंगे जो गर्मियों की छुट्टी के पश्चात हमारी पूरी एल आई सी की एक नींव स्थापित कर रही होगी | काफी नए साथियों के लिए ये एक नया अनुभव होगा तो उन्हें यह इस मुहिम में अपनी भागीदारी को स्थापित करने का समय भी देगा | अप्रैल से जून के महीने में हम इन बिन्दुओं पर मुख्यत: रूप से अपना ध्यान केन्द्रित करेंगे: -

(1) भाषा की बुनियाद पर अपने विद्यालय में साझा समझ बनाना और मिशन बुनियाद में अपनी भूमिका स्थापित करना |
(2) मिशन बुनियाद के इर्द –गिर्द अपनी कक्षाओं में गतिविधियों का अभ्यास करना और बाकी शिक्षक – शिक्षिकाओं के लिए सहायक भूमिका निभाना |

गतिविधि 1 :- केस स्टडी– जानकी ने पढ़ना सीखा

जानकी शायद कभी स्कूल गई थी, 7–8 साल पहले, कुछ समय के लिए। वह कई भाषाएँ बोल लेती है, हिंदी, नेपाली, बांगला। पढ़ना–लिखना नहीं जानती पर पढ़ने की बेहद ललक है। उससे जब पूछा गया...स्कूल क्यों छोड़ा.... उत्तर में उसका खिलखिलाने वाला चेहरा कहीं खो गया। आगे कुछ पूछने की गुंजाइश ही नहीं रही। बहरहाल....शुरू हुआ पढ़ने का सिलसिला बिना अक्षर–मात्रा, बारहखड़ी। मौखिक भाषा समृद्ध थी....इसलिए सीधे कहानियों से शुरू किया। जानकी अपने चारों ओर की मुद्रित सामग्री भरे माहौल के प्रति बेहद जागरूक थी। रोज़ हिंदी, अंग्रेजी के अखबार में नेपाल की खबरें ढूँढ़ना, पूरी निष्ठा से विज्ञापन पढ़ने की कोशिश करती। शाम को जब मैं घर वापस आती तो दिन भर की पढ़ी खबरें मुझे बताई जातीं, न समझ में आने वाले शब्दों पर निशान लगे होते। फिर उसे कहानी की छोटी–छोटी चित्रों वाली पुस्तक दी। उसने फ़ौरन पढ़ना शुरू किया। यकीन नहीं हुआ कि चित्रों व अक्षरों की आकृतियों की पूर्व छवियों का इस्तेमाल करते हुए जानकी ने पढ़ना शुरू कर दिया। कुछ अटककर, कुछ पूछकर उसने कहानी पढ़ ली। अनेक स्थानों पर चित्र देखकर अनुमान लगाया।

पढ़ाते वक्त यह महसूस हुआ कि कहानी में आए शब्द और मात्रा सहित कुछ अक्षर अलग से लिख लिए जाएँ तो बेहतर रहेगा। एक मददगार संसाधन के रूप में उनका प्रयोग हो सकेगा। बार–बार मुझसे पूछने की जगह वह स्वयं पता लगाने के लिए ऐसा एक सहारा चाहती थी। लगा अक्षर, मात्रा को पूरी तरह खारिज़ न करें, सहायक सामग्री के रूप में रख लें। पढ़ने की ललक ने उसे इतना प्रेरित किया कि वह कहानी के शब्दों को अपने आस–पास जो भी मुद्रित सामग्री जैसे, अखबार, पत्रिकाएँ मिलतीं, उनमें ढूँढ़ती।

गाने व टीवी देखने की शौकीन जानकी ने एक और तरीका ढूँढ़ा। उसने 'चित्रहार' टीवी कार्यक्रम नियमित देखना शुरू किया जहाँ गीत स्क्रीन पर लिखे हुए आते हैं। उसका पूरा ध्यान लिखे हुए शब्दों को गीत के शब्दों से जोड़ने में केंद्रित रहता। उसका छपी सामग्री का शब्द भंडार बढ़ने लगा।

जानकी के पढ़ने में लगातार सुधार हो रहा है। शब्द आसानी से पहचान लेती है, अनुमान, अंदाज खूब लगा लेती है।

जानकी पढ़ रही है बिना वर्णमाला रटे... समझकर पढ़ रही है, सवाल पूछते हुए पढ़ रही है, कहानी पर अपनी राय देते हुए पढ़ रही है। देर से ही सही पढ़ने का सफ़र शुरू हो चुका है।

1. जानकी ने वर्णमाला/ बारह खड़ी का ज्ञान हुए बगैर ही पढ़ना सीखा। अपने समूहों में उन कारणों की चर्चा कीजिए जिन कारणों से यह मुमकिन हो पाया।
2. जानकी ने अपने पूर्व मौखिक ज्ञान को पढ़ने और लिखने में प्रयोग किया। क्या भाषा पढ़ने और बोलने में कोई रिश्ता है? चर्चा कीजिए।
3. पढ़ने से हम क्या समझते हैं? इस पर चर्चा कीजिए।

एक बार पढ़ने की अपनी समझ बनाने के पश्चात, हम भाषा अधिग्रहण करने के मुख्य तरीकों को समझ लेते हैंः–

डीकोडिंग तरीकाः– यह तरीका भाषा की सबसे छोटी इकाई अक्षर की समझ से शुरू होता है। इसके अनुसार, बच्चों को शब्दों को टुकड़ों में बांटकर पहचानने फिर उसे बाले पाएं या पढ़ पाएं। वर्णमाला याद करना, उच्चारण या शब्द बोलना जैसी विधियां बहुत ही लोकप्रिय हैं जो इस तरीके पर काम करती हैं। इसका मुख्यतः यह कारण है कि पढ़ाने का यह तरीका पारम्परिक दौर से ही प्रचलन में है या इस तरह से पढ़ाना हमें ज़्यादा सुविधाजनक लगता है।	**सम्पूर्ण** भाषा **तरीकाः–** सम्पूर्ण भाषा तरीका इस बात पर केन्द्रित है कि भाषा अधिग्रहण में बच्चों के लिए एक वातावरण का निर्माण करना आवश्यक है जिसमें वे स्वयं को **अभिव्यक्त** कर सकें। इसमें पढ़ना, बोलना, लिखना और चित्र लेखन जैसे तरीकों के द्वारा बच्चें को अभिव्यक्ति का मौका दिया जाता है। यह बच्चों के संदर्भ में उनके जीवन से जुड़ी बातों को आधार बनाकर भाषा की बारीकियों को समझाने का प्रयास करता है। इसमें शिक्षक/ शिक्षिका बच्चों को बहुत अधिक डायरेक्ट निर्देश देने से बचते हैं और उसके बजाए बच्चों की सीखने की प्रक्रिया को फेसिलिटेट करते हैं।	**डिकोडिंग और संपूर्ण भाषा तरीके का मिश्रित तरीका** : -इस तरीके में जहां एक ओर बच्चों को अभिव्यक्ति के अधिक से अधिक अवसर दिए जाते हैं वही दूसरी ओर वर्ण माला से भी उनका परिचय कराया जाता हैं। मिशन बुनियाद में इसी तरीके का प्रयोग किया जा रहा हैं। जहां बच्चों को एक ओर कहानियों के माध्यम से स्वयं को अभिव्यक्त करने के, आपस में चर्चा करने के और पढने, लिखने के अवसर प्रदान किया जा रहे हैं वही दूसरी ओर उनका परिचय बारह खडी से भी कराया जा रहा है।

गतिविधि 2: भाषा **अधिग्रहण पर विद्यालय में वर्तमान प्रयास**:-

बुनियाद के तहत कार्यशाला में भाग लेने वाले शिक्षक, शिक्षा और एचओएस **द्वारा निम्नलिखित बिन्दुओं पर चर्चा**:-

1. **विद्यालय** में निष्ठा एवं नव–निष्ठा रीडर्स की संख्या___
2. अभी तक उनके साथ किस पद्धति पर काम हो रहा है? यहां पर यह उम्मीद है कि वे यह बता पाएं कि उनकी कक्षा पाठ्यक्रम बाकी कक्षाओं से कैसे अलग दिखता है।

3. आवश्यकतानुसार, किसी शिक्षक / शिक्षिका जो इन समूहों की कक्षाएं लेते हैं, वे भी अपना अनुभव साझा कर सकते हैं।

4. **आप** 2-3 **के छोटे समूह में चर्चा करे कि आप मिशन बुनियाद में कैसे योगदान दे सकते हैं**? **कुछ उदाहरण**:-
   - नव निष्ठा समूह के शिक्षक शिक्षिका के सा–थ मिलकर कुछ कक्षाएं लेना (आवश्यकतानुसार) , खासकर उन बच्चों के साथ जिन्हें व्यक्तिगत ध्यान की आवश्यकता हैं
   - स्वयं सेवी तौर पर मिशन बुनियाद में गर्मियों की छुट्टियों में अपना योगदान देना |
   - गर्मियों की छुट्टियों में बच्चों को विद्यालय भेजने एवं योगदान देने के लिए बच्चों के माता – पिता को प्रेरित करना |इसमें आप एस एम सी में मौजूद शिक्षक-शिक्षिका की भी सहायता ले सकते हैं |
   - रोजाना होने वाली 30 मिनट की अकादमिक चर्चा में मिशन बुनियाद पर ध्यान केन्द्रित कर ऐसी कक्षा कक्ष गतिविधियों को बढ़ावा दे सकते हैं जो इसे पूरा करने में सहायक हो |
   - रोजाना होने वाली 30 मिनट की अकादमिक चर्चा में इस बात पर चर्चा करना कि सभी शिक्षक-शिक्षिका कक्षा में कैसे बच्चों को अधिक से अधिक अभिव्यक्ति और पढने – लिखने के मौके दे सकते हैं|
   - विद्यालय स्तर पर अपनी कक्षाओं में एक पढने का कोना स्थापित करना जहां बच्चों को बिना रोके टोके कहानियाँ पढने की आज़ादी हो| इसमें एच ओ एस, बुनियाद में इस्तेमाल की गयी कहानियाँ, और टाइम टेबल इंचार्ज की मदद ली जा सकती हैं| इस के लिए विद्यालय स्तर पर कुछ समय भी निर्धारित किया जा सकता है |

इस चर्चा के बाद यहाँ लिखे कि आप कैसे मिशन बुनियाद में कैसे योगदान दे रहे होगे?

गतिविधि 3:– कहानी सुनाना, रोल प्ले और नाटक

विडियो का लिंक : -

https://www.youtube.com/watch?v=7WExuY1lHmU माध्यमिक गणितः कहानी सुनाना, रोल प्ले और नाटक

https://www.youtube.com/watch?v=81tzx7V7UEU : - प्राथमिक गणितः– कहानी सुनाना, रोल प्ले और नाटक

https://www.youtube.com/watch?v=Kl_nq-jHR5o&index=44&list=PLLjfVZ89nnNIDn_dPiumO1kamfpvSUUht : - प्राथमिक विज्ञान

बोलना और सुनना, पढ़ना और लिखना सभी सामान्य कौशल हैं और उनमें बच्चों की दक्षता, स्कूल में उनकी सफलता को प्रभावित करती है। कई स्थितियों में इन सभी कौशलों को एक साथ उपयोग में लाने की ज़रूरत होती है। इसलिए स्कूल स्तर पर भाषा का शिक्षण सभी की चिंता का कारण होना चाहिए, न कि केवल भाषा शिक्षक का दायित्व। साथ ही, भाषा के साथ जुड़े कौशलों को केवल प्राथमिक स्तर पर ही नहीं छोड़ दिया जाना चाहिए, बल्कि जैसे–जैसे विषय में नयी आवश्यकताएँ पैदा हों उनको माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक स्तरों तक ले जाना चाहिए।

NCF 2005 -3.1.4, Pg 46.

छोटे समूह में चर्चा के लिए प्रश्न : -

1. क्या भाषा अधिग्रहण सिर्फ भाषा के शिक्षक/ शिक्षिकाओं तक सीमित है?

2. बाकी विषय के शिक्षक/ शिक्षिकाओं का इसमें क्या भूमिका हो सकती है?

3. वीडियो में ऐसे कौनसे अंश हैं जो बच्चों को भाषा अधिग्रहण में सहायता करते हैं।

कक्षा के लिए सुझाई गई रणनीतियां

1.रोज़मर्रा के क्रिया कलापों का इस्तेमाल

2.कहानी सुनाना, रोल प्ले और नाटक

Using day to day activities for reading(रोजमर्रा के क्रिया–कलापों का इस्तेमाल)

लिखित सामग्री को लेकर बच्चों में जागरूकता हो इसके लिए कक्षाओं के रोज़मर्रा के क्रिया–कलापों का इस्तेमाल भी लिखने–पढ़ने के लिए किया जा सकता है। अपनी कक्षा की नियमित गतिविधियों पर थोड़ा विचार कीजिए ताकि साक्षरता की दृष्टि से उसकी उपयोगिता को उजागर किया जा सके। इनका इस्तेमाल कक्षा में रोज़ाना किया जा सकता है। इससे बच्चों की यह समझ भी स्पष्ट होगी कि लिखित सामग्री हमारी रोज़मार्रा की जिंदगी से जुड़ी है। इसके साथ ही इन गतिविधियों को करते समय बच्चों का ध्यान पढ़ने लिखने की जो वास्तविक प्रक्रिया है उस ओर भी जाएगा। इसका उदाहरण हनमे ' **जानकी ने पढ़ना सीखा** ' की केस स्टडी में पढ़ा और जाना।

कहानी सुनाना/ रोल प्ले और नाटकः कहानी सुनाना/ रोल प्ले और नाटकः कक्षा में कहानी बच्चों के साथ ना सिर्फ जुड़ाव का काम करती है, अपितु उन्हें नई नई कल्पनाओं की उड़ान भ्रने का मौका भी प्रदान करती है।

कहानी/ रोल प्ले और नाटक का प्रयोग अलग अलग स्तर पर किया जा सकता है। लेकिन ये सभी कक्षा/ पाठन स्तर के बच्चों के साथ अलग अलग तरीकों से लागू की जा सकती हैंः–

- जो बच्चे अभी पढ़ने की प्रारंभिक अवस्था में हैं (नव रीडर, निष्ठा या प्राइमरी) उनके साथ चित्रों से भरपूर कहानियों को ज़ोर–ज़ोर से पढ़कर या समूहों में पढ़वाकर उस पर चर्चा की जा सकती है। कहानी के आधार पर उनकी समझ की जांच करने के लिए पिछली एलआईसी में प्रयोग की गई तकनीकों का भी प्रयोग किया जा सकता है। (पीयर असेसमेन्ट, माइंड मैप, समूहों में चर्चा आदि) । बच्चों की आवश्यकता के अनुसार उन्हें कहानी के उपर स्वतन्त्र लेान का भी मौका दिया जा सकता है।
- अपने विषयों में इनका प्रयोग आकलन की दृष्टि से भी किया जा सकता है। कहानी, रोल प्ले गणित, विज्ञान आदि जैसे विषयों में भी प्रयोग में लाई जा सकती हैं। इसके द्वारा आप बच्चों को इन विषयों को उनके परिवेश से जोड़न का मौका देते हैं।

नोटः– जहां मौका मिले वहां कहानियों को पढ़ने का एक घंटा निर्धारित किया जा सकता है, जहां बहुत अधिक नुक्ताचीनी के बिना बच्चों को अपनी पसंद की कहानी पढ़ने/ सुनने/ सुनाने का मौका मिले, जिसे कहानी के घंटे का नाम दिया जा सकता है। इसके लिए कक्षा में स्थापित किए गए रीडिंग कॉर्नर का प्रयोग भी किया जा सकता है।

एक्शन प्लान **बनानाः** प्री – एल आई सी **एआरटी मीटिंग**
थीमः बुनियाद

उद्देश्य	**बच्चों को भाषा अधिग्रहण में आने वाली किस चुनौती को आप हल करने का प्रयास कर रहे हैं**	**इस चुनौती को हल करने के लिए चुनी गई कक्षा कक्ष गतिविधि**	**इस गतिविधि को लागू करने के बाद बच्चों मेंस्वयं /कक्षा में/ में आप क्या परिवर्तन देखने की उम्मीद रखते**	**गतिविधि की समय सीमा समय निर्धारित) (प्लान**
स्वयं की कक्षा में बच्चों की भाषा अधिग्रहण की प्रक्रिया को बेहतर करने के लिए				
मिशन बुनियाद के तहत विद्यालय में बच्चों के बुनियादी कौशल को बेहतर करने के लिए				

अनुलग्नक

इस चक्र की थीम पर विचार करें तो 30 मिनट के सत्र के लिए चर्चा के कुछ सुझाए गए बिंदु हैं:–

1- अगली कक्षा के अध्यापकों के साथ छात्रों के लर्निंग प्रोफाइल को साझा करना (अकादमिक स्तर के शुरुआत के महीने में खासतौर पर उपयोगी हो सकता है)। इसको लेकर 30 मिनट सेशन अवश्य करें जिसमें पिछले कक्षा के शिक्षक/शिक्षिका, अगली कक्षा के शिक्षक/शिक्षिका के साथ बच्चों की लर्निंग प्रोफाइल पर चर्चा कर सकें। ये प्रोफाइल सरल तौर पर इन बिंदुओं पर चर्चा कर सकती हैं:– /

- *बच्चे का नाम*
- *बच्चे का मजबूत पक्ष (विषय और कौशल दोनों)*
- *जिन बिंदुओं पर बच्चे को सहायता की आवश्यकता है (विषय और कौशल दोनों)*
- *घर की स्थिति और माता–पिता की बच्चों की पढ़ाई में रूचि*

2- मिशन बुनियाद पर शिक्षक– शिक्षिकाओं द्वारा कार्यशाला में सीखी गई रणनीतियों को बाकी शिक्षक– शिक्षिकाओं के साथ साझा करना

3- बच्चों के अभिभावक, मिशन बुनियाद में क्या भूमिका निभा सकते हें। इसको लेकर चर्चा करना एवं इसके लिए योजना बनाना

4- भाषा की बुनियाद को लेकर एआरटी सदस्यों द्वारा कक्षा में किए गए प्रयासों पर चर्चा करना।

5- विद्यालय के सभी शिक्षक–शिक्षिकाओं बच्चों के भाषा अधिग्रहण को बेहतर करने में क्या भूमिका निभा सकते हैं।

6- चर्चा करें कि बच्चों के रीडिंग स्तर के बारे में समझ का आकलन कैसे किया जाए कि कक्षा में सुरक्षित एवं भयरहित वातावरण रहे। चर्चा में इस बात पर ध्यान दिया जाए कि हम कैसे एक अध्यापक के रूप में स्कूल मे अपनी भाषा का प्रयोग करें" जो इस वातावरण को सुनिश्चित करे।

7- कक्षा विशिाष्ट चर्चा: इस तरह की चर्चा में अच्छी प्रथाओं, चुनौतियों, बच्चों के परफोर्मेन्स में सुधार या किसी विशेष छात्र में सुधार पर विचार–विमर्श किया जाएगा। इस चर्चा में आप बातचीत करेंगे कि आपकी कक्षा में कौन से विचार कारगर साबित हो रहें हैं और कौन से आइडिया ज़्यादा कारगर साबित नहीं हो रहे हैं।

8- बच्चों के रीडिंग स्तर में सुधार लाने की रणनीतियों पर चर्चा

नोट: इसके अलावा आप सभी से निवेदन है कि आप स्वयं भी ऐसी कुछ वीडियोज़, रीडिंग इत्यादि ढूंढें और उन्हें अपने साथियों के साथ व्हाट्सऐप ग्रप पर साझा करें जो कि इस साइकल की थीम से जुड़ी हो। प्रयास रहेगा कि समय समय पर सभी के साथ इन्हें साझा किया जा सके।